प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/03

निरंतर आय के लिए ब्रायलर फार्म का वैज्ञानिक प्रबंधन

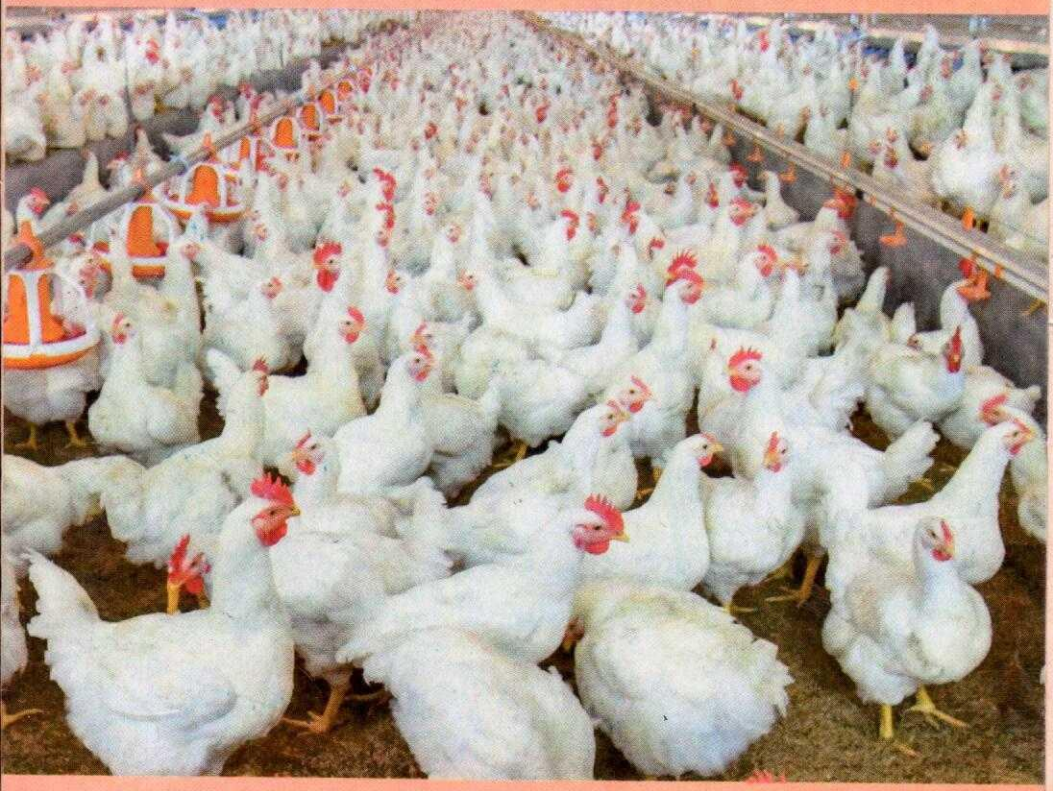

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

निरंतर आय के लिए ब्रायलर फार्म का वैज्ञानिक प्रबंधन

पूरे देश में ब्रायलर मुर्गी पालन एक उद्योग का रूप ले चुका हैं। परन्तु इस व्यसाय से सालो भर एक समान आय नहीं प्राप्त हो पाता है। इस कारण हजारों फार्म प्रत्येक वर्ष बंद हो जाते है, अगर इन फार्मों का वैज्ञानिक प्रबंधन किया जाये तो किसानो की आमदनी में सकारात्मक वृद्धि किया जा सकता है।साल के शुरू में ही अनेक पोल्ट्रीं फॉर्म, खासतौर से ब्रॉयलर फॉमों में रोग समस्याएं बढ़ती हैं। उसके साथ ही दवा – टीके के खर्च और मृत्यु - दर के अलावा नुकसान में बढ़ोतरी होती है। सवाल है कि हर साल घुम – फिर कर यह तस्वीर क्यों सामने आती हैं? जिले के पोल्ट्री रोग निर्णय लैबरेटरी से लेकर पोल्ट्री फॉर्म तक बार – बार इसी सवाल के रूबरू होना पड़ता है। गौरतलब है, जाड़े और उसके बाद यह नुकसान सबसे ज्यादा होता है।

ज्यादातर मामले में इस दौरान बाजार (बिक्री मुल्य) बढ़िया मिलने की वजह से बीमारी में हुए नुकसान के बावजूद मुनाफे में कटौती किसानो को खलती नहीं।हर साल खासतौर से जाड़े के समय बीमारी की रोकथाम और काबु करने से पोल्ट्री उद्योग के लाखों रूपये के नुकसान से बचा जा सकता है।

बीमारी की समस्याएं

क) संक्रामक सीआरडी (माइकोप्लाजमोसिस), सीसीआरडी (जटिल लंबी सांस की बीमारी), आईबी (संक्रामक ब्रोंकाइटिस), न्यूकैसल डिजिज (रानीखेत बीमारी),आईबीडी (गंबोरो बीमारी) कैलिबैसिलोसिस (ई – कोलाईजनित), कॉक्सीडाओसिस (साथ में कभी सहयोगी बैक्टेरियाई संक्रमण), माइकोटिक न्यूमोनिया (ब्रूडर न्यूमोनिया और एसपरजिलासिस वगैरह।

ख) असंक्रामक माइकोटॉक्सिकोसिस (फफूंदजलित विषक्रिया), ऐसाइटिस (पेट में पानी जमना), ऐसाइटिस (पेट में पानी जमना), ऐसाहटिस – हाइड्रोपेरिकार्डियम (सीने व पेट में पानी जमना), गाउट (गठिया) वगैरह।

१. आबोहवा में अस्वाभाविक फेर – बदल, कभी– कभी रात में अतिरिक्त ठंड और दिन में गरमाहट, कभी – कभी अचानक निम्नचाप के प्रभाव से बारिश, वायुप्रवाह में अस्वाभाविकता या अचानक तब्दीली, तापमान, नमी और वायुप्रवाह में अस्वाभाविक रद्धोबदल।

२. रोगजीवाणु का प्रकोप व तादाद बढ़ना वातावरण में संक्रमण का अधिक दबाव, खासतौर से जहां – तहां बीमार मृत मुर्गी कौए – कुते को खिलाने से बीमारी तेजी से फैल जाती है।

३. सही तरीके से फॉर्म प्रबंधन में कमी और देखभाल संबंधी चूक। अतिरिक्त ठंड, गरमी व लोडशेडिंग से मुकाबला करने में पहले से मुस्तैद होने में कमी। ब्रूडर का ताप टीकठाक रखने में जरूरत से ज्यादा परदे से ढ़कना, आवश्यक हवा चलने में कमी और अव्यवस्थित देखभाल।

४. फॉर्म में मुर्गी रोग प्रतिरोध क्षमता कम करने वाली बीमारी और उसके कारणों की मौजूदगी व असर (खाने में माइकोटॉक्सिन या फफूंदजनित विषक्रिया, फॉर्म में अतिरिक्त एमोनिया गैस का होना,अतिरिक्त ऐंटिबायोटिक का इस्तेमाल सबक्लीनिकल (लक्षण – हीन) या क्लीनिकल (लक्षणयुक्त) गंबोरो और सीआरडी वगैरह की मौजूदगी।

५. मात्रा में अधिक अनावश्यक दवाओं (खासतौर से ऐंटिबायोटिक, कॉक्सीडियानाशक वगैरह) का इस्तेमाल। सही देखभाल के नाहक इस्तेमाल की कोशिश।

रोगसमस्या की रोकथाम

इस रोग समस्या और उसकीआर्थिक क्षति को पूरी तरह से नहीं रोक पाने पर भी काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। इसके लिए अग्रिम सावधानी, संपूर्ण जागरूकता, विज्ञानसम्मत नियंत्रण विधि व प्रतिरोध व्यवस्था की जानी चाहिए।

१. जरूरी है विश्वसत हैचरी से निरोग व उम्दा चूजे लेना (ऐसे में प्रसिद्ध ब्रीडिंग फॉर्म व हैचरी समेत सरकारी पोल्ट्री फॉर्म से ब्रॉयलर चूजा पहले लेना चाहिए।

२. आवश्यक है बढ़िया पोल्ट्री आहार यानी मैस मुहैया करवाना (ऐसे में नामी – गिरामी खाद्य निर्माता कंपनी से या घर पर दाना बनाकर दिया जा सकता है)।

३. ब्रूडर और फॉर्म में स्वस्थ व रोगमुक्त वातावरण बनाना, चूजा लाने के कम – से कम दो – तीन दिन पहले सही तरीके से उपयुक्त डिसइनफैक्टेंट से स्प्रे या फ्यूमिगेशन के जरिये ब्रूडर व फॉर्म का परिशोधन। ब्रूडर की तापमात्रा व हवा

की आवाजाही का सही नियंत्रण।

४. गैर जरूरी व जरूरत से ज्यादा दवाइयों के इस्तेमाल से परहेज रखते हुए आवश्यक व नियंत्रित दवाइयों का इस्तेमाल विशेषज्ञ और लैबरेटरी की सलाह के मुताबिक करना चाहिए।

५. रोग प्रतिरोध क्षमता कम करनेवाले रोग व कारणों के अग्रिम निर्णय व नियंत्रण व्यवस्था लेने और विशेषज्ञ की सलाह पर रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ानेवाली (इम्युनेस्टिमूलेंट) दवा का पीने के पानी में इस्तेमाल।

६. वैक्सिन (टीका) उपयुक्त तापमात्रा में (२ – ४ डिग्री सेंटीग्रेड) संरक्षण समेत निर्धारित समय में विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार उपयोग करना नितांत आवश्यक है (खासतौर से रानीखेत व गंबोरो टीकाकरण कमर्शियल ब्रॉयलर और रानीखेत टीकाकरण अबाध पद्धति से मुर्गीपालन में)।

७. बॉयोसिक्युरिटी, हाईजिन, सैनिटेशन वगैरह सही तरीके से मान कर चलना चाहिए। लैबरेटरी परीक्षण के बाद मृत मुरगी कुते – कौए को खिलाने के बजाय तैयार 'डिसपोजल पिट' में डालना या गहरे गड्ढे में डाल देना चाहिए।

उपयुक्त प्रशिक्षण, जागरूकता शिविर, संगोष्ठी, अग्रिम प्रचार समेत संपूर्ण नियंत्रण विधि वगैरह से फार्म प्रबंधन के वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर इस व्यवसाय से किसान सालो भर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते है।

आलेख्य एवं प्रस्तुतिकरण:- पंकज कुमार, सरोज कुमार रजक, पुष्पेन्द्र कुमार सिंह
विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
निदेशक,प्रसार शिक्षा
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14
Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in
Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021